

भैया दूज कथा प्रारम्भ

दीपावली के तीसरे दिन अर्थात् कार्तिक शुक्ल द्वितीया को भाई दूज के नाम से जाना जाता है। इस दिन भाई अपनी बहन के हाथों रौली-अक्षत लगवाकर मिठाई खाता और उसे दक्षिणा के रूप में कुछ द्रव्य भी देता है। इस दिन भाई के लिए बहिन के घर का भोजन करने का विधान है। परन्तु कहीं-कहीं जिनके भलाई बहिन के घर नहीं पहुँच पाते उनकी बहिनें भाई के घर पर जा कर उन्हें टीका लगाकर मिठाइयाँ खिलाती है। Copyright(c) Budhiraja.com पौराणिक कथाओं के आधार पर ऐसा कहा जाता है कि, एक बार यमुना (नदी) ने अपने भाई यमराज को मांगलिक द्रव्यों से टीका लगाकर उन्हें भोजन कराया था। जिस दिन यमुना ने भाई से आग्रह कर भोजन आदि से सन्तुष्ट किया था, उस दिन कार्तिक शुक्ल द्वितीया तिथि थी। तभी से इस पर्व को माना जाने लगा। बहिन की सेवा से सन्तुष्ट होकर यमुना से वरदान माँगने के लिए कहा। बहिन यमुना ने उत्तर दिया- आज की पुनीत तिथि के दिन जो भाई-बहिन एक साथ मेरे जल में स्नान करें, उन्हें अन्त काल में यम-यातना न भोगना पड़े और वह जीवनकाल में सभी प्रकार से सुख-समृद्धि को प्राप्त हो। अपनी बहिन को अभीसत वरदान देकर यमराज अपने लोक को चले गए। अतः हम सभी लोगों का नैतिक कर्तव्य है कि, इस पावन-पर्व को विधिवत् मनाए।

॥ समाप्त ॥

Copyright(c) Budhiraja.com